By
Rahul Kumar Jha
Dept.of Political Science

Lecture-9

Topic - Nation-Building and its Problems

Class - XII, Part-A, Unit-1

Subject - Political science

Date - 27 July, 2020

By Rahul Kumar Jha

राष्ट्र निर्माण और उसकी समस्याएँ :-

हैदराबाद का विलय :- हैदराबाद एक बड़ी रियासत थी जिसमे कुछ हिस्से आज के महाराष्ट्र कर्नाटक व आन्ध्र प्रदेश तक फैले थे। यहाँ का शासक निजाम कहलाता था। वह चाहता था कि हैदराबाद को आजाद रियासत का दर्जा दिया जाए। इसके लिए उसने एक वर्ष के लिए भारत सरकार से समझौता भी किया। किन्तु इसी दौरान हैदराबाद के लोगों ने निजाम के विरुद्ध आंदोलन छेड़ दिया।

तेलंगाना के किसान, हैदराबाद की महिलाएँ, कम्युनिस्ट व हैदराबाद कांग्रेस सभी इसमें सम्मिलित थे। निजाम ने आंदोलन को

दबाने के लिए अर्द्ध सैनिक बल की रचना किया जिसे रजाकार कहा जाता था। साम्प्रदायिक प्रवृत्ति होने के कारण इन रजाकारों ने और मुसलमानों पर अत्याचार किए। अन्ततः सितम्बर 1948 में भारतीय सेना हैदराबाद पहुँची। कुछ दिनों के संघर्ष के बाद निजाम ने आत्मसमर्पण कर दिया और इसी के साथ हैदराबाद का भारत में विलय हो गया। हैदराबाद रियासत को भारत संघ में विलय कराने में तत्कालीन गृह मंत्री श्री वल्लभ भाई पटेल का योगदान काफी महत्वपूर्ण माना जाता है।

मणिपुर का विलय — मणिपुर के महाराजा बोधचन्द्र सिंह ने आजादी से पूर्व ही भारतीय संघ में अपनी रियासत के विलय संबंधी सहमति पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए थे। यह सहमति पत्र 'इन्स्ट्रूमेंट

ऑफ एक्सेशन' के नाम से जाना जाता था। जनमत के दबाव में महाराजा ने जून 1948 में चुनाव कराए तथा मणिपुर में संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना हुई। मणिपुर भारत का पहला भाग था जहाँ सार्वभौम वयस्क मताधिकार को अपनाकर चुनाव हुए।

मणिपुर विधानसभा में विलय के प्रश्न पर गहरे मतभेद थे। मणिपुर कांग्रेस रियासत के भारतीय संघ में विलय का समर्थन कर रही थी जबकि अन्य पार्टियाँ इसके विरुद्ध थी। भारत सरकार ने महाराजा पर दबाव डालकर रियासत का विलय कर लिया जिसका वहां की जनता ने तीव्र विरोध किया।

इसी तरह जोधपुर रियासत, जिसके नवाब अपने रियासत को पाकिस्तान में विलय करने के पक्ष में था, जनता के व्यापक विरोध, जनमत संग्रह और सरदार पटेल की कूटनीति के माध्यम से रियासत को भारत में विलय करा दिया।

CHAPTER CONTINUES...